5

नया समझौता

''फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घराने से नई वाचा बान्धूंगा'' (यिर्मयाह 31:31)।

''प्रभु कहता है, देखो, वे दिन आते हैं, कि मैं इस्राएल के घराने के साथ, यहूदा के घराने के साथ, नई वाचा बान्धूंगा'' (इब्रानियों 8:8)।

मसीही लोगों का देश के अच्छे नागरिक होना आवश्यक है (रोमियों 13:1)। उन्हें नये और अच्छे नियमों के लागू होने पर उनका सज़्मान करने की अपेक्षा होती है। यदि वे सुधार धीमी गति से हो रहे हैं, तो वे धैर्य से इसकी प्रतीक्षा करते और आवश्यक सुधारों के लिए उपयुज़्त ढंग से काम करते हैं। एक मसीही व्यज़्ति अपर्याप्त परिवर्तन होने पर, कृतज्ञता से, कानून का पालन करने वाले व्यज़्ति की तरह अधिक उपयोगी परिवर्तनों के लिए सहायता देता है।

इसी प्रकार, मसीही व्यज़्ति यह ध्यान में रखते हुए कि परमेश्वर के सज़्पूर्ण परिवर्तन, उसके लिए ईश्वरीय प्रबन्ध और संसार की भलाई के लिए हैं, मनुष्य से अपने व्यवहार में परमेश्वर के परिवर्तनों को प्रसन्नता से ग्रहण कर लेता है।

इस कारण, हमें उस वाचा को जो परमेश्वर ने दी है, आनन्द से स्वीकार कर लेना चाहिए। अपनी व्यवस्था या वाचा को उसने मसीह की मृत्यु तथा पुनरुत्थान के द्वारा बदल दिया है। इस परिवर्तन की घोषणा पिन्तेकुस्त के दिन भरपूरी से सुसमाचार का प्रचार करते समय की गई।

परमेश्वर की नई वाचा को लाए जाने की योजना और भविष्यवाणी की गई थी। यह मनुष्य से उसके सज़्बन्ध को सुधारने का परमेश्वर के सफल होने तक बार-बार किया जाने वाला प्रयोग नहीं था; बल्कि संसार के उद्धार के लिए उसकी करुणापूर्ण योजना थी। इस्राएल के साथ पुरानी वाचा बांधी गई और सही समय आने तक उसके पवित्र उद्देश्य के लिए इस्तेमाल की जाती रही। योजना के अनुसार, समय पूरा होने पर उसकी जगह यीशु के लहू द्वारा मुहर की गई एक नई वाचा दी गई (इब्रानियों 8:7, 13)।

यिर्मयाह ने इस नये प्रबन्ध के आने की भविष्यवाणी की थी। एक समय जब सारी आशा जाती हुई लग रही थी, तो परमेश्वर ने यहूदा को भविष्यवाणी के द्वारा एक उज़म वाचा की आशीष तथा आशा का दर्शन दिया था जो उसने अपने लोगों के साथ बांधनी थी।

यरूशलेम के भयंकर विनाश और बाबुल की दासता के आरज़्भ को देखकर, यिर्मयाह ने उस भविष्य के बारे में लिखा था जो परमेश्वर ने नई वाचा की शर्तों में अपने लोगों के लिए किया था:

> फिर यहोवा की यह भी वाणी है, सुन, ऐसे दिन आने वाले हैं जब मैं इस्राएल और यहूदा के घराने से नई वाचा बान्धूंगा। वह उस वाचा के समान न होगी जो मैं ने उनके पुरखाओं से उस समय बांधी थी जब मैं उनका हाथ पकड़कर उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया, ज़्योंकि यद्यपि मैं उनका पिता था, तौभी उन्होंने मेरी यह वाचा तोड़ डाली। परन्तु जो वाचा मैं उन दिनों के बाद इस्राएल के घराने से बान्धूंगा, वह यह है: मैं अपनी व्यवस्था उनके मन में समवाऊंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा; और मैं उनका परमेश्वर ठहरूंगा, और वे मेरी प्रजा ठहरेंगे, यहोवा की यह वाणी है। तब उन्हें फिर एक दूसरे से यह न कहना पड़ेगा कि यहोवा को जानो, ज़्योंकि यहोवा की यह वाणी है, छोटे से लेकर बड़े तक, सब के सब मेरा ज्ञान रखेंगे; ज़्योंकि मैं उनका अधर्म क्षमा करूंगा, और उनका पाप फिर स्मरण न करूंगा (यिर्मयाह 31:31-34)।

यिर्मयाह की भविष्यवाणी को आधार बनाकर, इब्रानियों की पत्री के लेखक ने पुरानी और नई वाचाओं में अंतर किया था। इब्रानियों की पत्री सताव के उस दौर में लिखी गई थी जब कमज़ोर मसीही मसीहियत के प्रति अपनी निष्ठा छोड़ कर यहूदी मत की ओर लौटने लगे थे। लेखक ने इन निराश, हतोत्साहित, मसीहियों को जिनका मोहभंग हो गया था, नए और उज़म समझौते का जो परमेश्वर ने अपने लोगों से किया था फिर से महत्व याद दिलाकर उन्हें जोश दिलाना चाहा (इब्रानियों 8:8-12)।

कलीसिया इस नई वाचा का फल है जो परमेश्वर ने लोगों से बांधी है। इसलिए, यिर्मयाह की भविष्यवाणी में दिया गया इस वाचा का विवरण हमें कलीसिया की प्रकृति को अलग ढंग से दिखाएगा।

एक नई निष्ठा

यिर्मयाह की भविष्यवाणी के अनुसार, पुरानी और नई वाचाओं में एक बड़ा अन्तर, परमेश्वर की योजना में मन या हृदय को दिया गया स्थान है। परमेश्वर ने कहा था, ''मैं अपनी व्यवस्था को उनके मनों में डालूंगा, और उसे उनके हृदय पर लिखूंगा, ... और वे मेरे लोग ठहरेंगे'' (इब्रानियों 8:10ख)। अपने नये समझौते में परमेश्वर हर मसीही में नई निष्ठा डालता है। कलीसिया ''नया हृदय'' पाए हुए परमेश्वर के लोग हैं।

पुरानी वाचा में शारीरिक जन्म के द्वारा प्रवेश किया जाता था। उसमें *परिवार के वंश से* इस्राएली कहलाते थे न कि *आत्मिक निर्णय से*। जिस कारण, हर यहूदी के लिए परमेश्वर के साथ अपने सज़्बन्ध को समझना आवश्यक था। एक यहूदी बालक यहूदी परिवार में जन्म लेने के कारण परमेश्वर की विशेष वाचा में शामिल तो हो जाता था, परन्तु जब तक उसके माता-

पिता अच्छी तरह से उसे न सिखाएं तब तक उसे इसकी समझ नहीं आती थी या उसे पता नहीं चलता था। बच्चों को न केवल यह सिखाया जाता था कि वे कौन हैं बल्कि सब इस्राएलियों को उनकी पहचान और यहोवा परमेश्वर के प्रति उनके दायित्वों को याद करने के लिए निरन्तर सिखाया जाता था, जिसने उन्हें अपनी चुनी हुई कौम के रूप में चुना था।

परन्तु, नई वाचा में आत्मिक जन्म से प्रवेश किया जाता है जिसमें परमेश्वर की इच्छा को मानना और उसके प्रति आज्ञाकारी विश्वास से उसकी बात मानना आवश्यक है। नया जन्म परमेश्वर की जानकारी और उसके आत्मिक राज्य में प्रवेश करने के विवेकपूर्ण निर्णय के बिना नहीं हो सकता है (यूहन्ना 6:44, 45)। परमेश्वर के राज्य में हर व्यक्ति ने उद्धार का संदेश सुना हुआ है (रोमियों 10:17) और उस संदेश को ग्रहण किया है (प्रेरितों 2:41), और विश्वास तथा आज्ञा पालन से उस संदेश को मानना चुना है (प्रेरितों 2:40)।

हृदय पर व्यवस्था के लिखने की बात का अर्थ समझने के लिए, एक बाल विहार (केजी स्कूल) के बच्चे की मां के बारे में विचार करें। वह नगर के व्यस्त मार्ग में कार चलाते हुए अपने बच्चे के स्कूल के सामने, एक साइन बोर्ड पर लिखा हुआ पढ़ती है, ''गाड़ी धीरे चलाएं-आगे स्कूल है।'' यह मां क्या करेगी? क्या वह उस साइन बोर्ड को अनदेखा करके तेजी से गाड़ी को भगा ले जाएगी? क्या वह उस साइन बोर्ड से असुविधा होने की शिकायत करेगी? नहीं। वह बड़ी सावधानी से अपनी गाड़ी धीमी कर लेगी। मां को पता है कि उसका लाड़ला, उसका दुलारा, स्कूल के मैदान में खेल रहा है और नियम उसके बच्चे की तरह दूसरे बच्चों की सुरक्षा के लिए भी है। सच तो यह है कि उसके लिए गाड़ी धीमी करने के लिए बताने के कानून की आवश्यकता नहीं है। वह अपने बच्चे और दूसरे सब बच्चों के लिए अच्छे से अच्छा करना चाहती है। वह जानती है कि जैसे वह अपने बच्चे से प्यार करती है वैसे ही दूसरे माता-पिता भी अपने बच्चों से प्यार करते हैं। वास्तव में मां उस बोर्ड के लिए जो सड़क पर लगा है, बहुत कृतज्ञ है। यदि यातायात संचालन के लिए सड़क पर स्कूल के निकट वह साइन बोर्ड न होता, तो वह अधिकारियों को सुझाव देती कि ऐसा साइन बोर्ड तुरन्त लगना चाहिए। अपने बच्चे के प्रति स्नेह और उसकी चिंता के लिए उसकी प्रतिबद्धता के कारण ''गाड़ी धीरे चलाएं-आगे स्कूल है'' का नियम मां के हृदय पर लिखा हुआ है।

परमेश्वर के नियम मसीही लोगों के मनों पर लिखे गए हैं। विश्वास और प्रेम की कार्यकारी शक्ति से हमें उसकी इच्छा का पालन करने की प्रेरणा मिलती है (1 यूहन्ना 5:3)। उसके संदेश ने पहले हमारे मनों में भरोसा और आज्ञाकारिता उत्पन्न की; उस संदेश के प्रति विश्वास के जवाब में हम उसकी संतान बने। हम उसके वचन को खाकर अर्थात उसके प्रेम और अनुग्रह पर मनन करते हुए, उसकी इच्छा के लिए अपने मनों को खुले रखकर, हर रोज़ उसके साथ चलकर अपने नये मनों को बनाए रखते हैं।

एक नई क्षमा

दोनों वाचाओं में एक और भिन्नता परमेश्वर द्वारा हमें दी जाने वाली क्षमा में देखी

जाती है। अपनी नई वाचा में आने वालों के लिए परमेश्वर ने कहा है, ''ज़्योंकि मैं उनके अधर्म के विषय में दयावन्त हूंगा, और उनके पापों को फिर स्मरण (न) करूंगा'' (इब्रानियों 8:12)। नई वाचा के इस पहलू को हम ''एक नई क्षमा'' कह सकते हैं। कलीसिया उन लोगों को कहा जाता है जिन्हें परमेश्वर द्वारा पाप से सचमुच धोया गया है।

भविष्य प्रभावी ढंग में परमेश्वर ने पुरानी वाचा के लोगों को पापों की क्षमा उपलज़्ध करवाई। मूसा की व्यवस्था के अधीन, प्रत्येक वर्ष प्रायश्चित के महान दिन दिए जाने वाले पशुओं के बलिदान से पाप टाल दिया जाता था (लैव्यव्यवस्था 16)। जो कुछ मूसा की व्यवस्था द्वारा ठहराया गया था वह मसीह के आने और हमेशा के लिए एक ही बार पाप के लिए उसके मरने तक काफी था (इब्रानियों 9:15)। जब तक क्रूस पर यीशु की मृत्यु से पूर्ण क्षमा नहीं हुई तब तक उनका वास्तविक प्रायश्चित (भविष्य के अपवाद के साथ) नहीं हुआ था।

अब, नई वाचा में पूर्ण क्षमा मिलती है। यीशु ने पाप के प्रायश्चित के लिए सिद्ध बलिदान दे दिया है। हमारा महायाजक बनकर, वह स्वर्ग में प्रवेश कर गया है, जहां वह हमारे पाप की क्षमा के लिए हमारी बिनतियां परमेश्वर तक पहुंचाने के लिए उसके दाहिने हाथ बैठा है (1 यूहन्ना 2:1)। क्षमा वर्तमान वास्तविकता के रूप में दी जाती है न कि भविष्य में किसी दिन चढ़ाए जाने वाले भविष्य के प्रायश्चित के बलिदान के रूप में। मसीह में हम ''उसके अनुग्रह से उस छुटकारे के द्वारा जो मसीह यीशु में है, सेंत मेंत धर्मी ठहराए जाते हैं'' (रोमियों 3:24)।

नई वाचा में
परमेश्वर के साथ हमारा सज़्बन्ध
पुरानी वाचा में दिए गए सज़्बन्ध से
अधिक प्रगाढ़ और निजी है।

मान लो कि आपने बहुत अधिक कर्ज़ लिया था। जो अब इतना बढ़ गया है कि आप अपने शेष जीवनकाल में केवल उसका ज़्याज ही अदा कर सकते हैं। अंत में आपकी मृत्यु के बाद भी आप अपने साहूकारों की नज़र में डिफाल्टर ही होंगे ज़्योंकि अभी भी आपने उनका बहुत सा कर्ज़ चुकाना है। इस कर्ज़ के कारण आपकी खुशियां छिन जाती हैं और आपका जीवन सुन्दर बनने के बजाय एक भयानक सपना बन जाता है।

फिर, मान लो कि आपके बचाव के लिए कोई करोड़पति आकर कहता है, ''मैं हर साल तुज़्हारे कर्ज़ का ज़्याज चुकाकर तुज़्हारे साहूकारों में तुज़्हारा सज़्मान बढ़ाऊंगा। इसके अलावा तुज़्हारी मृत्यु होने पर मैं मूलधन भी चुका दूंगा!'' यह अच्छी खबर है, परन्तु आपका शेष जीवन अभी भी कर्ज़ में ही है। जीते जी आप इस कर्ज़ से छूट नहीं सकेंगे।

अब मान लो कि एक और करोड़पति आकर आपसे कहता है कि वह आपका पूरा कर्ज़ चुका देगा। वह कहता है, ''मैं तुज़्हारा पूरा कर्ज़ चुका दूंगा, जिससे इसके बाद तुम पूरी

तरह से कर्ज़ मुज़्त हो जाओ!'' ज़्या यह सबसे अच्छी खबर नहीं है? पहले हितकारी ने *भविष्य में* क्षमा की पेशकश की थी, परन्तु दूसरा *वास्तविकता में* क्षमा की पेशकश करता है; इसलिए वह आज से ही नये जीवन की पेशकश करता है।

धर्मी ठहराए हुए लोगों के रूप में हम मसीह की देह में रहते हैं। हमारे पिछले सब पाप धो दिए गए हैं (रोमियों 3:24), और हमें रोज़ किए जाने वाले किसी पाप से निरन्तर शुद्ध किया जाता है (1 यूहन्ना 1:7)। नई वाचा की क्षमा के द्वारा, हम पज़्के तौर पर कर्ज़ मुज़्त हो जाते हैं। यह आशीष ही हमें हमारे मनों में आनन्द के गीत गाने के लिए होनी चाहिए! कृज़्ज़ता के कारण हमें अपने छुटकारा देने वाले की निरन्तर सेवा करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए।

एक नई संगति

दोनों वाचाओं में एक तीसरी तुलना वह नया सज़्बन्ध है जो परमेश्वर ने नई वाचा में आने वालों को अपने साथ के रूप में दी है। परमेश्वर ने कहा था, ''और हर एक अपने देश वाले को और अपने भाई को यह शिक्षा न देगा, कि तू प्रभु को पहिचान, ज़्योंकि छोटे से बड़े तक सब मुझे जान लेंगे'' (इब्रानियों 8:11)।

नई वाचा में परमेश्वर के साथ हमारा सज़्बन्ध पुरानी वाचा में दिए गए सज़्बन्ध से अधिक गहरा और निजी है। कलीसिया परमेश्वर का निवास स्थान है।

नये जन्म से हमें नई आत्मिक संगति मिलती है। नई वाचा में हर किसी ने परमेश्वर के परिवार में आत्मिक जन्म लेकर वाचा में प्रवेश करना चुना है (यूहन्ना 3:5)। इसलिए नई वाचा में हर व्यज़्ति का परमेश्वर से पिता/पुत्र का सज़्बन्ध है (गलतियों 4:6, 7)। इस नई वाचा के आधार पर यीशु ने अपने चेलों को यह प्रार्थना करना सिखाया कि, ''हे हमारे पिता, तू जो स्वर्ग में है'' (मज़ी 6:9)। हर वाचा की तरह नई वाचा में भी नियम हैं, परन्तु इसकी मुज़्य बात परमेश्वर से गहरा और निजी सज़्बन्ध है।

एक महिला ने कोई किताब पढ़ी जो उसे उबाऊ अर्थात समय बर्बाद करने वाली लगी। बाद में, उसकी मुलाकात एक आदमी से हुई जिसका नाम उस किताब के लेखक वाला था। पहले तो, उसने नामों की समानता पर ध्यान नहीं दिया; परन्तु जब उनमें गहरी दोस्ती हो गई तो अंतत: उसने कहा, ''मैंने एक बार एक किताब पढ़ी थी जिसके लेखक का नाम तुज़्हारे नाम जैसा ही था। ज़्या तुज़्हारा उस लेखक से कोई सज़्बन्ध है?'' उसने उज़र दिया, ''हां, मैं ही वह लेखक हूं। मैंने ही वह किताब लिज़ी थी।'' उस महिला ने जितनी जल्दी सज़्भव हो सका उस किताब को फिर से पढ़ा; इस बार, उसे वह किताब दूसरी सब किताबों से दिलचस्प लगी! दूसरी बार पढ़ने पर ज़्या अलग बात हुई थी? जवाब ''सज़्बन्ध'' शज़्द में मिलता है। पहली बार पढ़ने पर, उस स्त्री का सज़्बन्ध केवल किताब से था; दूसरी बार पढ़ने पर उसका सज़्बन्ध किताब के लेखक से था। लेखक से उस सज़्बन्ध के कारण उस स्त्री का दृष्टिकोण और रुचि बदल गई थी!

पुरानी वाचा उस स्त्री द्वारा पुस्तक को पहली बार पढ़ने की तरह है, जबकि नई वाचा दूसरी बार पढ़ने की तरह। नई वाचा में परमेश्वर से हमारा सज़्बन्ध गहरा हो गया है। वह हमारा

स्वर्गीय पिता है और हम उसकी संतान हैं (रोमियों 8:17)। परमेश्वर और उसका पुत्र हर रोज़ हमारे साथ रहते हैं (1 यूहन्ना 1:3)। पवित्र आत्मा हम में वास करता है (1 कुरिन्थियों 6:19)। हम परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं, उसके वचन को मानते हैं, और परमेश्वर, पुत्र और पवित्र आत्मा के साथ अपने सज़्बन्ध की खुशी से उसके साथ काम करते हैं।

सारांश

कलीसिया नई वाचा द्वारा बनाई गई थी। फिर तो, समझ आ सकता है कि कलीसिया को लोगों के ऐसे समूह के रूप में देखा जाना चाहिए जिनके मन नये हैं, नई निष्ठा, नई क्षमा और परमेश्वर के साथ एक नया सज़्बन्ध और नई संगति है। परमेश्वर के परिवार में आत्मिक रूप से जन्म लेने वालों के रूप में हमारे मनों पर उसकी व्यवस्था लिखी गई है। हम उस विश्वास के कारण जो प्रेम के द्वारा कार्य करता है, उसकी इच्छा पूरी करना चाहते हैं (गलतियों 5:6)। हम वे लोग हैं जिन्हें वास्तविक क्षमा मिली है, अर्थात हमारे पाप का कर्ज़ ''पूरा चुका दिया गया'' है। परमेश्वर हमारा स्वर्गीय पिता और यीशु हमारा बड़ा भाई बन गया है। जीवित परमेश्वर का आत्मा हम में वास कर रहा है (गलतियों 4:6)।

नई वाचा विश्वव्यापी तौर पर लागू है ज़्योंकि यीशु ने कहा है, ''तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा'' (मरकुस 16:15, 16)। जो कोई भी उद्धार के परमेश्वर के संदेश को मानकर विश्वास और आज्ञा मानने से उसकी बात मानता है वह उसके परिवार या कलीसिया के रूप में परमेश्वर और मसीह के साथ नई वाचा में आ सकता है। वह वाचा का भाग बनकर इसकी सब आशिषें पाएगा।

इसका अर्थ यह हुआ कि परमेश्वर के साथ मनुष्य का सबसे महत्वपूर्ण समझौता यही है। यह किसी व्यज़्ति द्वारा अपने दिमाग का सबसे अच्छे और भले ढंग से इस्तेमाल करना हो सकता है। अपनी समझ से, अपनी पसन्द से, वह अनादि परमेश्वर के साथ कभी न खत्म होने वाली वाचा बांधता है। हमारे अधिकतर समझौते अस्थाई होते हैं, जो केवल तब तक रहते हैं जब तक उनकी शर्तें पूरी होती हैं; परमेश्वर के साथ यह समझौता जीवन बदलने वाला और सदा तक रहने वाला है।

हमारे जीवन का कार्य परमेश्वर की नई वाचा को समझना, इस वाचा में आना और पृथ्वी पर अपने प्रवास के अंत तक इस वाचा में अपना योगदान देना है। ज़्या आप परमेश्वर की नई वाचा में आने को सहमत हैं?

अध्ययन व चर्चा के लिए प्रश्न

1. प्रिय शिक्षाओं या विचारधाराओं के लिए मसीही व्यज़्ति का ज़्या जवाब होना चाहिए?
2. उस प्रबन्ध के प्रति जिसमें हम रहते हैं मसीही व्यज़्ति की ज़्या ज़िज़्मेदारियां हैं?

3. एक मसीही को दोहरी नागरिकता कैसे मिली है, और उसकी प्राथमिकताएं ज़्या होनी चाहिए ? कौन सी नागरिकता अधिक महत्वपूर्ण है ?
4. ज़्या अपने लोगों के साथ परमेश्वर ने अपनी व्यवस्था या वाचा बदल दी है ? अपने उज़र के प्रमाण के लिए बाइबल का पद बताएं।
5. इस्राएल के साथ बांधी परमेश्वर की वाचा में एक यहूदी कैसे शामिल होता था ?
6. आज के लोगों के साथ बांधी गई परमेश्वर की वाचा में एक मसीही कैसे प्रवेश करता है ?
7. उस व्यवस्था का जो आपके हृदय पर लिखी गई है, कोई व्यज़्तिगत उदाहरण दें।
8. परमेश्वर पुराने नियम के समय में अपने लोगों को क्षमा कैसे करता था ?
9. परमेश्वर द्वारा आज दी जाने वाली क्षमा की पुराने नियम के समय में दी जाने वाली क्षमा से तुलना करें।
10. पाप से उद्धार के नये नियम के संदर्भ में प्रयुज़्त शज़्द ''धर्मी ठहराए गए'' का अर्थ बताएं।
11. पुराने नियम के किसी परिवार के लिए ''परमेश्वर को जानने'' के लिए एक दूसरे को सिखाना ज़्यों आवश्यक है ?
12. नई वाचा में आप परमेश्वर और किसी मसीही के सज़्बन्ध का वर्णन कैसे करेंगे ?
13. यह दिखाने के लिए कि नई वाचा विश्वव्यापी होने के लिए बनाई गई थी, नये नियम की आयतें बताएं।
14. अपने मन में सबसे भला और अच्छा इस्तेमाल ज़्या हो सकता है ?